मैंने जाना सच्ची खुशी को

* डा.कौशल चौहान, मुलाना (हरियाणा)

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश के एक गांव नेक नामपुर नानई में हुआ। जब मैं सात साल की थी तो हम तीनों बहनों का इकलौता भाई चल बसा। उसके जाने से माँ-बाप को गहरा सदमा लगा। माँ-बाप के सदमे का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और मैंने तय किया, मैं कुछ ऐसा करूँगी जिससे माँ-बाप को खुशी दे सकूँ, लड़के की कमी को पूरा कर सकूँ। सन् 1996 में दसवीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए मेरठ गई, वहाँ होस्टल में रहकर पढ़ने लगी जहाँ सखियों ने मेरा नाम खुशी रख दिया। मेरे शिक्षक कहते थे, यह लड़की बहुत सहनशील है लेकिन आसमान छूना चाहती है।

किसी को ठीक से सन्तुष्ट नहीं कर पा रही थी

शहर की मायावी दुनिया में आने के बाद गाँव का भोलाभाला बचपन, आधुनिकता का ताज पहनाकर लौट गया। मन व्यर्थ विचारों से घिरने लगा। पढ़ाई-लिखाई में सबसे आगे निकलने की स्पर्धा ने मेरे मन को दिशाहीन-सा कर दिया। इसी बीच मेरी दोस्ती ब्रिजेश (मेरे पति), जो मेरे साथ ही पढ़ते थे, से हो गई और शादी भी हो गई। प्रेमविवाह होने के कारण शादी के बाद ससुराल में मुझे कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ससुराल वालों से वो स्वीकृति नहीं मिली, जो मिलनी चाहिए थी। मुझे आभास ही नहीं हुआ कि मैं तनावग्रस्त होती जा रही हूँ। माँ-बाप की चिन्ता, बहनों की चिन्ता, पढ़ाई की चिन्ता, नौकरी में परेशानियाँ और शारीरिक परेशानियाँ भी थीं। इसी बीच पुत्र को जन्म दिया, वो भी बहुत बीमार रहता था। सभी की ज़रूरतों का ध्यान रखते-रखते अपना अस्तित्व ही खोता जा रहा था, फिर भी किसी को ठीक से सन्तुष्ट नहीं कर पा रही थी। मन बहुत कमजोर हो चुका था। इन सबके बावजूद दो बातें सकारात्मक थी, मैंने पढ़ाई नहीं छोड़ी और नौकरी नहीं छोड़ी। छोटी बहनों की शादी के बाद माँ-बाप को साथ ले आई। पिताजी शूगर के मरीज़ थे, डाक्टर को दिखाया तो वे बोले, शूगर बढ़ी हुई है, इन्हें तनाव से परे रखना है।

भगवान को बहुत करीब पाया

उसी दिन ब्रह्माकुमारी बहनें घर पर आईं, अलविदा तनाव शिविर का पर्चा पिताजी को देकर चली गईं। शाम को महाविद्यालय से लौटते हुए मैं सोच रही थी कि मैं ऐसा क्या करूँ जिससे पिताजी का तनाव कम हो

जाये। घर पहुँचकर पर्चे को देखा और अलविदा तनाव शिविर के बारे में पढ़ा। अगली सुबह पांच बजे पिताजी को लेकर शिविर में चली गई। शिविर का विषय था 'खुशी की अनुभूति'। उस दिन मैंने जाना कि वास्तव में खुश होना किसे कहते हैं, खुशी के आँसू कैसे आते हैं। मैंने जाना कि भगवान मेरे कितने करीब हैं। जब मैं छोटी थी तब छत पर बैठकर आसमान को देखकर कहती थी कि भगवान, बस एक बार मुझे यह बता देना कि मरने के बाद कहाँ जाते हैं। जब भी कभी देवी-देवताओं के धारावाहिक देखती थी तो सोचती थी, ये सभी एक-दूसरे से शक्ति लेते रहते हैं, इनमें सबसे बड़ा भगवान कौन है? मैं तो उसी से ही प्यार करूँगी जो सबसे बड़ा होगा। परन्तु बड़ी होते-होते दुनिया के आकर्षण में आकर इन सब बातों को भूल चुकी थी।

महसूस हुआ, मैं बहुत खास हूँ

गई तो थी पिताजी को लेकर लेकिन भगवान ने निमन्त्रण मुझे भेजा था क्योंकि उनसे कहीं ज्यादा ज़रूरत मुझे थी। मैं कितने तनाव में हूँ और भगवान को भी परेशानियाँ सौंपी जा सकती हैं मुझे यह अहसास तक नहीं था। मैं अपने आप को भगवान के करीब तथा हलकी महसूस कर रही थी और तनाव मुझसे दूर भागता हुआ महसूस हो रहा था। मुझे अनुभव हुआ कि मैं कितनी खास हूँ, भगवान मुझसे बहुत प्यार करते हैं। उन्हें मेरी बहुत फिक्र है। खैर, बाबा ने मुझे ढूंढ़ा। मैं घर में सभी को सोता हुआ छोड़कर, सिर्फ अपने पिताजी को लेकर शिविर में आ गई थी। शिविर खत्म होने से थोड़ी देर पहले ही पुन: लौट आई। मुझे पता ही नहीं चला कि यह कौन-सी संस्था थी जिसने इतना अच्छा अनुभव कराया। दुर्भाग्यवश कभी ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में सुना भी नहीं था।

पिताजी की आँखों में थे खुशी के आँसू

जहाँ मैं काम करती थी वहाँ कुछ दिन बाद एक विद्यार्थी ज्ञानामृत पत्रिका लेकर आया। उसी से मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में पता चला और यह भी पता चला कि अलविदा तनाव शिविर भी ब्रह्माकुमारी संस्था ने ही लगाया था। उस स्टूडेन्ट ने मेरी उत्सुकता को देखते हुए सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन को मेरा मोबाइल नंबर दे दिया। उन्होंने मुझे कई फोन किये और माउन्ट आबू (शान्तिवन) में शिक्षक सम्मेलन में चलने का आग्रह किया। मैंने अपनी एक सखी के साथ माउन्ट आबू जाने का कार्यक्रम बनाया। माउन्ट आबू आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। सम्मेलन में बड़े-बड़े लोगों से मुलाकात हुई, बहुत अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिली। एक भी क्लास मिस नहीं की। शान्तिवन में चार दिन रहे, ज्यादातर समय डायमंड हाल में ही बीता। घर के किसी भी सदस्य की याद नहीं आई। आते हुए गुलज़ार दादी जी ने सौग़ात में एक आध्यात्मिक डायरी दी और कहा, 'अब चारों ओर खुशी मुसकरायेगी'। लौटकर आने के बाद एक दिन मेरे गांव के पास वाले गजरौला सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन का नम्बर लिया और उनसे कहा, 'दीदी, हमारा एक बहुत बड़ा मकान गाँव में खाली है और वहाँ आस-पास बाबा का कोई आश्रम भी नहीं है। अगर मैं गाँव के लोगों के लिए बाबा का आश्रम खुलवा पाई तो अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझूंगी।' कुछ दिन बाद ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला खुली। जब घर में बाबा का झण्डा लग रहा था तब मैंने पिताजी की आँखों में आँसू देखे, वैसे ही आँसू, जैसे मैंने अपने छोटे भाई की मृत्यु के बाद देखे थे पर ये खुशी के आँसू थे। अब वहाँ पर बहुत अच्छी सेवा चल रही है।

पढ़ाई में बाबा की बहुत मदद रही

बाबा मिला, बहुत अच्छा नारायणी नशा रहने लगा। बहुत सारी परीक्षायें आईं, जिन रिश्तों के लिए मैं जीती थी, बाबा ने उन्हीं रिश्तों से अवगत कराया कि वो कितने खोखले हैं। बाबा ने सभी समस्याओं को बड़ी सहजता से पार कराया। मेरी पी.एच.डी. की पढ़ाई में बाबा की बहुत मदद रही। एक सर्वे में बताया गया था कि अगर पी.एच.डी.थिसिस से एक लेख निकलता है तो उसकी कीमत 10 लाख होती है अर्थात् सरकार को उससे दस लाख का फायदा होता है और मेरी पी.एच.डी.थिसिस से अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पचास लेख निकले। यूनिवर्सिटी ने मेरे निबंधों को पुस्तक रूप में छपवाने की स्वीकृति दी। यह सब बाबा की मदद से सम्भव हुआ।

बाबा के प्यार से मन मज़बूत हो गया

बाबा से प्यार होने का सबसे बड़ा फायदा यही रहा कि मेरा मन जो बहुत कमज़ोर था, बहुत मज़बूत हो चुका है। परीक्षायें आती रहती हैं परन्तु बाबा

(शेष..पृष्ठ 47 पर)

के बिना मन अशान्त रहता। मैं बार-बार भगवान से यही विनती करता कि प्रभु, एक बार हमें हमारी माताजी से मिला दो। जब माता जी की याद आती, कलेजा फट जाता था।

सहारा ॐ शान्ति का

माताजी को गुज़रे लगभग 21 वर्ष बीत चुके थे, मन को शान्ति नहीं मिल रही थी, सब कुछ होते हुए भी खालीपन, अकेलापन महसूस होता था। शान्ति की खोज में एक माह का अवकाश लेकर भारत-भ्रमण पर निकल गया, सबसे पहले कोलकाता में स्वामी विवेकानन्द के मठ, फिर कालीघाट, फिर दक्षिणेश्वर गया। बाद में मुम्बई चला गया, जहाँ मुम्बा देवी, सिद्धिविनायक, शिरडी के साईं बाबा के दर्शन किये। सबसे एक ही प्रार्थना करता, हमारे मन को शान्ति प्रदान करो प्रभु। मुम्बई में 10 दिन रहने के बाद दिल्ली चला आया। वहाँ राधास्वामी संस्थान में गया। फिर माँ वैष्णो देवी (जम्मू-कश्मीर) गया। वहाँ तीन दिन रहने के बाद वापस बाबा गोरखनाथ मंदिर गया। फिर दो दिन बाद अपने गांव बैरिया गया जहाँ स्वामी जी महाराज बाबा के दर्शन किए और लौटते समय गोपालगंज जिले (बिहार प्रान्त) में माँ थाँवे वाली महारानी के पास झोली फैलाई। उसके बाद कसया (कुशीनगर) में भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल पर गया और जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के सानिध्य में पावानगर (फाजिलनगर) गया मगर मन को शान्ति नहीं मिली। लेकिन दिनांक 26.5.2013 को शाम को जैसे ही फाजिलनगर में 'ॐ शान्ति' आश्रम में ब्रह्मा बाबा व मम्मा का मनमोहक चित्र देखा, मन को अपार शान्ति मिली।

ममता-मोह का नाश

जिस शान्ति की खोज में मैं दर-दर भटकता फिर रहा था वह शान्ति 'ॐ शान्ति' आश्रम पर जाने पर मिली। मैं अपनी माताजी की आत्मा की शान्ति के लिए 21 वर्षों से परेशान था, उसका समाधान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आकर हुआ। यहाँ हमें सिखलाया गया कि आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है, कभी मरती नहीं, अपना पार्ट बजा कर चली जाती है और 5000 वर्ष बाद फिर उसी समय पर, वही पार्ट बजाती है। इससे हमको अपार शान्ति मिली और लगा कि माताजी फिर 5000 वर्ष बाद हमको जरूर मिलेंगी इसी समय। हमारे मोह-ममता का नाश हो गया और पल-पल शान्ति का अनुभव होने लगा। दिल से यही गीत निकलने लगा

'बनाया प्रभु ने है अपना,
दिया सुख हमें है कितना,
न इतने तारे अम्बर में,
न सागर में ही जल इतना'

❖

मैंने जाना.. पृष्ठ 42 का शेष

उन्हें बड़ी सहजता से, आगे के लिए पाठ पढ़ाकर पार कराता है। आज मैं एम.एम.यूनिवर्सिटी, मुलाना (हरियाणा) में प्रशासनिक पद पर कार्यरत हूँ। यहाँ यूनिवर्सिटी में ही मुझे फ्लैट मिला है। यूनिवर्सिटी के पास में ही ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र है। यहाँ के सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन मुझे बहुत प्यार करती हैं। मेरे पति जयपुर में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में विपणन प्रबंधक (Marketing manager) के पद पर कार्यरत हैं। बाबा के ज्ञान में नहीं हैं परन्तु सहयोगी हैं और मन ही मन में बाबा को मानते भी हैं। जब भी मुझ पर कोई परेशानी आती है तो मुझे याद कराते हैं कि बाबा को याद करो। मेरा बेटा और मेरी माँ मेरे साथ ही रहते हैं। इन दोनों के प्रति अपनी ज़िम्मेवारियों को निभाते हुए आज मैं अपने आप को बहुत हलका महसूस करती हूँ। मेरे सर्व सम्बन्ध शिव बाबा से हैं और बाबा से यही चाहना है कि चाहे कुछ भी हो जाये परन्तु मेरा और बाबा का प्यार हमेशा बढ़ता रहे। ❖